मैथिली (प्रतिष्ठा)
बी० ए० पार्ट-02

प्रकरण - 'मिथिला नाटक'

बसंत कुमार
अतिथि शिक्षक
दिनांक - 06-04-

स्वधर्मपरिनिष्ठता सकलशास्त्रपारङ्गता।

सुनीतिपथचारिता गुरुनिदेशसम्पालिता,

सदा शुभचरित्रता जननि मोदसंवर्धिता।

मिथिला - उचितेँ ई कथा अछि।

मैथिल कहय छथि - हे मात: अहाँक

आशीर्वादक फल अवश्य होयत,

किएकेँ -

आशाबीजं हृदि क्षेत्रे यत्नेन परिरोपितम्।
फलदं भवता सिक्तं मातुराशीर्वचोऽम्भसा॥

माता मिथिला - अपन मैथिल पुत्र पर गर्व करैत छथि।

प्रथम मैथिल - माता मिथिलासँ कहैत छथि - अहाँक गुणगौरवध्वनि तँ श्री सीताक जन्महिसँ तीनू लोकमे गुञ्जायमान होइत रहत।

[illegible]

मिथिला - प्रथम मैथिलकेँ कहैत छथि- स्त्रीकेँ मुख्य यश पुत्रवती भेलासँ होइत छैक, ताहूमे जँ सुपुत्र होइक। माँ मिथिलाकेँ चिंता होइत छनि जे ई भारतक कुरु आओर पाण्डवक लड़ाईमे भारतवीरक संहारसँ धर्म रक्षाक चिंता।

ओ धर्मवीर बलवीर कलाप्रवीन,

भै गेल हा जगत से जनसौं विहीन।

तैँ चित्त नहि होइछ राति दीन,

तैँओ अहाँ सबहि छी सबमे धुरीन॥